REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 6 | MARCH - 2021

भारत की बिदेश नीति : स्वतंत्रता प्राप्ति से वर्तमान तक

डॉ. अंजना खेर
सहायक प्राध्यापक (राजनिति विज्ञान)
शासकीय महाविद्यालय बल्देवगढ जिला टीकमगढ म0प्र0

सारांशः—

विश्व व्यवस्था में आये क्रान्तिकारी परिर्वतनों के फलस्वरूप भारतीय विदेश नीति में भी व्यवहारिक बदलाव आ रहा है। भारत की विदेश नीति अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ सार्थक सम्बन्ध पर बल देती है। ताकि राष्ट्रीय आर्थिक बदलाव, राष्ट्रीय सुरक्षा, सम्प्रभुता और भौगोलिक एकता सहित अपने मुख्य लक्ष्यों को सुनिश्चित करने के साथ—साथ हम अपनी मुख्य क्षेत्रीय एवं वैस्रिक चिन्ताओं का सामाधान कर सके। भारत ने अपने सभी पडोसी और सार्क देशों के साथ अपने सम्पर्क को गहन बनाया है। हमने अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय रूप से आवाज उठाई और अन्तर्राष्ट्रीय लोक नीति के उभरते क्षेत्रों में स्वतंत्र स्थिति बनाई।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने दुनिया में भारत का दबदबा कायम करने के लिए आक्रामक विदेश नीति के सहारे अपनी सारी ताकत लगा दी है। उन्होने भारत के बारे में अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिगत ही बदल डाला है जो कभी लडखडाता हुआ देश था, आज उभरती हुई वैश्विक ताकत में तब्दील हो चुका है।

मुख्य शब्दः—विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, शांतिपूर्ण सह—अस्तित्व, परमाणु परीक्षण

प्रस्तावनाः—

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति का सर्वोपरि उदृदेश्य राष्ट्र हित होता है इसलिए राष्ट्र की विदेश नीति भी परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। एक राष्ट्र अन्य राष्ट्रों के साथ अपने संबंध निर्वाह में जिस नीति का अनुसरण करते है। उसे विदेश नीति कहते है। किसी भी देश की विदेश नीति विश्व परिस्थितियों की अभिव्यक्ति होती है। इसलिए कभी भी विदेश नीति की विवेचना और उसका मूल्यवान किसी व्यक्ति विशेष के आधार पर नही किया जा सकता क्योकि विदेश नीति की संरचना और गतिशीलताके पीछे उस देश का इतिहास, उसकी भौगोलिक परिस्थिति, दार्शनिक एवं वैचारिक पहलुओं और आर्थिक एवं सामाजिक शक्तिओं का आधार होता है, तथापि कुछ व्यक्ति विशेष होते है जो अपने देश की आकांक्षाओं का मूर्तरूप बन जाते है इस आधार पर भारत की विदेश नीति एक अनुपम उदाहरण है। इसका मुख्य उद्रदेश्य परस्पर सहयोंग, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और विश्व बन्धुत्व स्थाापित करना है। क्योंकि भारत की नीति अन्य गुटों के प्रभावों से मुक्त और स्वतंत्र रहकर विदेश नीति के स्वतन्त्र विकल्पों गुटनिरपेक्षता की नीति का संचालन करना है।

भारत विश्व में एक विस्तृत भू—भाग ओर विशाल जनसंख्या वाला देश है। अतः इसकी विदेश नीति का विश्व की राजनीति पर गहरा प्रभाव पडता है। स्वतंत्रता से पूर्व भारत की विदेश नीति नही थी क्योंकि भारत

ब्रिटिश सत्ता के अधीन था। परन्तु विश्व मामलों में भारत की एक सुदीर्ध परम्परा रही है।इसका सांस्कृतिक अतीत अत्यन्त गौरवमय रहा है। न केवल पडोसी देशों के साथ अपितु दूर–दूर स्थित देशों के साथ भी भारत का सांस्कृतिक एवं व्यापारिक आदान प्रदान होता रहा है। आज भी अनेक पडोसी देशो पर उसकी सांस्कृतिक छाप स्पष्ट दिखायी पडती है।[1]

किसी भी देश की विदेश नीति एक विशिष्ट आंतरिक व बाह्रय वातावरण के स्वरूप के द्वारा काफी हद तक निर्धारित की जाती है भारत की विदेश नीति के प्रमुख उद्रदेश्यों एवं सिध्दांतों को सही दिशा में समझने के लिए इसके ऐतिहासिक संदर्भ का अध्ययन करना अनिवार्य है क्योंकि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विदेश नीति निर्माण पर गहरा प्रभाव होता है। इस संदर्भ में टिप्पणी करते हुए नेहरू जी ने उचित ही कहा था कि यह नही समझना चाहिए कि भारत ने एकदम नए राज्य के रूप में कार्य प्रारंभ किया है इसकी नीतियां हमारे भूत व वर्तमान इतिहास तथा राष्ट्रीय आंदोलन के विकास तथा इसके अभिव्यक्त विभिन्न आदशों पर आधारित है।[2] विदेश नीति को परिभाषित करने का सर्वप्रथम कार्य जाार्ज मॉडलस्की ने किया है उन्होने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ए थ्योरी ऑफ फॉरन पॉलिसी में विदेश नीति की परिभाषा देते हुए लिखा है कि विदेश नीति समुदायों द्वारा विकसित उन गतिविधियों की व्यवस्था है जिसके द्वारा एक देश अन्य देशों के व्यवहार को ढालने तथा अपने व्यवहार को अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण के अनुसार ढालने का प्रयत्न करता है।[3]

विदेश नीति के उद्देश्यः–

विदेश नीति के संदर्भ में सर्वविदित है। कि प्रत्येक राष्ट्र की विदेश नीति के उददेश्य अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के अनुरूप तय किए जाते है भारत भी इस स्थिति का अपवाद नही है इसके अध्ययन से ज्ञात होता है कि कुछ राष्ट्रीय हितों पर जमा सहमति होती है,जो प्रायः सभी राष्ट्रों दवारा अपनाऐं जाते है।

इस संदर्भ में जयन्तनुजा बंद्योपध्याय ने भारतीय विदेश नीति के तीन प्रमुख उद्ेश्यों की ओंर संकेत किया है ये तीन उद्ेश्य है– राष्ट्रीय सुरक्षा, विकास तथा विश्व व्यवस्था।[4]

भारत की विदेश नीति की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए श्री जवाहर लाल नेहरू ने सितंम्बर 1946 में एक प्रेस सम्मेलन में कहा था।वैदेशिक सम्बन्धों के क्षेत्र में भारत एक स्वतंत्र नीति का अनुसरण करेगा और गुटोंकी खीचतान से दूर रहते हुए संसार के समस्त पराधीन देशों के आत्म निर्णय का अधिकार प्रदान कराने तथा जातीय भेदभावकी नीतिका दृढतापूर्वक उन्मूलन कराने का प्रयत्न करेगा। साथ ही वह दुनिया के शांति प्रिय राष्ट्रों के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोंग और सद्भावना के प्रसार के लिए भी निरंतर प्रयत्नशील रहेगा नेहरू कायह कथन आज भी भारत की विदेश नीति का आधार स्तम्भ है। भारत की विदेश नीति की मूल बातों का समावेश हमारे संविधान के अनुच्क्षेद 51 में कर दिया गया हैं जिसके अनुसार राज्य अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढावा देगा। राज्य राष्ट्रों के मध्य न्याय और सम्मानपूर्वक सम्बन्धों को बनाये रखने का प्रयास करेगा। राज्य अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों तथा सन्धियों का सम्मान करेगा तथा राज्य अन्तर्राष्ट्रीय झगडों को पंच फैसलों द्वारा हल करने की रीति को बढावा देगा।[5]

इसके अलावा भारत उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंग भेंद का विरोध करता है, निःशस्त्रीकरण का समर्थन करना, एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना, एफ्रो एशियाई क्षेत्रीय सहयोग, संयुक्त राष्ट्र में आस्था तथा सभी राष्ट्रों में मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना एवं भारतीय मूल एवं प्रवासी भारतीयों की रक्षा करना प्रमुख उदृदेश्य है।[6]

शोध–पत्र के उदृदेश्यः–

प्रस्तुत शोध पत्र में भारत की विदेश नीति के स्वतंत्रता प्राप्ति से वर्तमान तक का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।

शोंध प्रविधिः–

प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक एवं विश्लेषणत्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस शोध पत्र में तथयों का संकलन पुस्तकों, समाचार पत्र, पत्रिकाओं एवं शासकीय अभिलेखो से प्राप्त किया गया है।

विदेश नीति के सिध्दांतः–

भारतीय विदेश नीति के सिध्दांतों को दो भागों में बॉटा जा सकता हैः–

(क)– प्रमुख सिद्धांत
1– गुटनिरपेक्षता
2– पंचशील

(ख)– अन्य सिद्धांत
1– यथार्थवाद
2– गत्यात्मकता एवं अनुरूपता
3– शांतिपूर्ण सहअस्तित्व

(क)– प्रमुख सिद्धांत

1– गुटनिरपेक्षता :–

भारत गुटनिरपेक्षता सिद्धांत के संस्थापक राष्ट्रों में से एक है। भारत की स्वतंत्रता केपूर्व ही नेहरू ने भारतीय विदेश नीति पर चर्चा करते हुए कहा था कि स्वतंत्र भारत स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण करेगा तथा विश्व शक्तियों के द्वारा निर्मित सैनिक गुटों से दूर रहेगा। इसके साथ उन्होंने यह भी कहा था कि भारत साम्राज्यवाद एवं उपनिवेंशवाद का विरोध करेगा। और इस हेतु वैश्विक सहमति की प्राप्ति का प्रयास करेगा। तथा उन देशों एवं उनकी जनता के साथ पूर्ण सद्भाव रखेगा जो कि अभी भी साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद की गिरफत मे है। जिससे कि उन्हे इससे मुक्त किया जा सके। जिसका अर्थ यह है कि इन आदेशों पर एक स्वतंत्र विदेश नीति का निर्माण करना।[7]

अतः इस प्रकार से जवाहर लाल नेहरू का यह विचार सचमुच भारत द्वारा अपनायी गयी गुटनिरपेक्षता का मुख्य आधार है।

गुटनिरपेक्षता नीति के कई पहलू है, परंतु सामान्य रूप से इसे शीतयुद्ध व उससे सम्बन्ध गुटबन्दियों से अलग रहने की नीति माना गया है इसे दूसरे शब्दों में शीतयुद्ध से सम्बद्ध सैन्य गठबन्धों में भागीदारी न करने वाला सिद्धांत भी माना गया है। इसके अतिरिक्त इसे भारत द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाने वाला सिध्दांत भी माना जाता है। इस सिध्दांत के द्वारा भारत अपने विकल्पों की स्वतंत्रता के साथ अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति तथा मुददों की योग्यता के आधार पर समर्थन करना चाहता है।[8]

इस प्रकार गुटनिरपेंक्षता का सिध्दांत एक गत्यात्मक विदेश नीति है जिसमें सकारात्मक व नकारात्मक दोनो ही पहलू विद्यमान है। इसके नकारात्मक पहलू–

1– शक्ति गुटों या शीतयुद्ध गुटबन्दियों से अलग रहना, तथा 2– सैन्य गठबन्धनों में शामिल नही होना।

इसकें सकारात्मक पहलू–

1– विश्व शांन्ति हेतु कार्य करना। 2– विश्व में स्वतंत्रता के प्रसार को बढाना। 3– उपनिवेशबाद की समाप्ति करके स्वतंत्र राष्ट्रों के उदय का समर्थन तथा 4– राष्ट्रों के मध्य सहयोग के दायरों का विकास करना।[9]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट है कि भारत का गुटनिरपेक्षता से क्या अभिप्राय है। अतः इस प्रकार से जवाहरलाल नेहरू का यह विचार सचमुच भारत द्वारा अपनायी गयी गुटनिरपेक्षता का मुख्य आधार है।

2– पंचशीलः–

भारतीय विदेश नीति में पंचशील की नीति इसके नैतिक व शान्ति स्थापना के मूल्यों की घोतक है। इस दृष्टि से पंचशील गुटनिरपेक्षता के सिध्दांत का ही भाग है। पंडित नेहरू अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति को केवल कल्पना तक ही सीमित नही रखना चाहते, बल्कि विश्व शान्ति हेतु उसके व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करना चाहते थे इसलिए उन्होने इस नीति के कियान्वयन हेतु शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के पॉच सिध्दांतो का प्रतिपादन किया । पंचशील के सिद्धांतों कों सर्वप्रथम 29 अप्रैल, 1954 के भारत चीन व्यापारिक समझौते की प्रस्तावना में प्रतिपादित किया । जिसके बाद में 28 जून 1954को चीन के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान जारी संयुक्त घोषणा–पत्र में दोहराया गया।

पंचशील के प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित है।–
1– एक दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता व सर्वोच्च सत्ता के लिए परस्पर सम्मान की भावना।
2– अनाक्रमण
3– एक–दूसरें के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।
4– समानता व पारस्परिक लाभ
5– शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व।[10]

(ख)–अन्य सिद्धांतः–

1– यथार्थवादः–

भारतीय विदेश नीति के अन्य सिद्धांतों में विभिान्न राष्ट्रों की विदेश नीति के समान यथार्थवादी दृष्टिकोण रहा है। इसके अंतर्गत भारत ने हमेशा अपने राष्ट्रीय हितों को पूरा करने का प्रयास किया है। कई बार विशेषज्ञ नेहरू द्वारा अपनाई गई नीतियों को मात्र आदर्शवादी मानते है लेकिन यह सत्य नही है। क्योकि नेहरू ने स्वयं कहा है कि किसी भी देश के राष्ट्रीय हितों के बारे में दो प्रकार के दृष्टिकोंण होते है एक दूरदर्शिता पर आधारित व दूसरा तात्कालीन हितों पर आधारित। इस संदर्भ में आज का आदर्शवाद कल का यथार्थवाद होगा। इसके माध्यम से आने वाले कल या अगले वर्ष की घटनाक्रम का अनुमान लगाया जा सकता है तथा अपने आपको उसके अनुरूप ढाला जा सकता है। व्यावहारिक व्यक्ति या यथार्थ वादी केवल आप के बारे में या केवल निकटतम घटनाओं के बारे में सोचता है इसलिए हर समय लडखडाता रहता है।[11]

2– गत्यात्मकता व अनुरूपताः–

भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत गत्यात्मक होने के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढालने की क्षमता रखते है। उदाहरर्णाथ, गुटनिरपेक्षता का अर्थ यह नही है कि भारत हमेशा सैन्य सहायता का विरोधी रहा है। बल्कि अपने राष्ट्रीय हितों के अनुरूप यदि उचित हो तो उसने इस प्रकार की सहायता भी ली है। सन 1962 के युद्ध के समय अमेरिका से सैन्य सहायता लेना, 1971 के युद्ध से पूर्व भारत–सोवियत मैत्री संधि करना इसके ज्वलंत उदाहरण है। इसके अतिरिक्त परमाणु अप्रसार, व्यापारिक प्रतिबन्धों, सैन्य गुटबंन्यिों, आर्थिक क्षेत्रीयवाद, आदि विभिान्न मुददों के अनुरूप अपने आप को सक्षम बनाने का प्रयास किया हैं।

3– शांतिपूर्ण सह–अस्तित्वः–

शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का सिद्धांत भी विदेश नीति का एक सिद्धांत है। यद्यपि यह पंचशील के सिद्धांत का एक हिस्सा ही है। परंतु व्यापक संदर्भ में यह भारत की जिओं और जीने दो की परंपरा का द्योतक है इसे पंचशील से एक संदर्भ में अलग देखा जा सकता है। क्योकि शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व द्वारा विश्व में वैचारिक या अन्य किन्ही आधारों पर स्थाापित भेदभाव की मान्यता को अस्वीकार कर सभी राष्ट्रों के साथ मैत्री पूर्ण संबंधों की स्थापना पर बल दिया गया है। इस प्रकार विश्व शांति व विकास की सभी प्रक्रियाओं में सभी राष्ट्रों से मित्रता पूर्वक एवं सदभावना पर आधारित संबंधों पर बल दिया गया है।[12]

भारत की विदेश नीतिः स्वतंत्रता प्राप्ति से वर्तमान तक –

स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक के 73 वर्षों में सम्पूर्ण विश्व व्यवस्था ने एक नवीन स्वरूप ग्रहण कर लिया है। विश्व व्यवस्था के नवीन ढांचे में खुद को समायोजित करने की प्रक्रिया के अधीन भारत ने भी अपनी विदेश नीति को पर्याप्त लचीला एवं अनुकूलनशील स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया है भारत की विदेश नीति में इस बात को अच्छी तरह समझा गया है कि जलवायु परिवर्तन ऊर्जा ओर खाद्य सुरक्षा जैसे मुददे भारत में रूपांतरण के लिए महत्वपूर्ण और उनके समाधान के लिए वैश्विक सहयोग अनिवार्य है।

जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल (1947–64) में भारत की विदेश नीति की स्थापना में जवाहरलाल नेहरू की देन सबसे महत्वपूर्ण मानी गई है। नेहरू द्वारा प्रतिपादित गुटनिरपेक्षता की नीति, शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का सिद्धांत, विश्व शांति का सिद्धांत, संयुक्त राष्ट्र के सिद्धांतो में विश्वास आदि अनेक

महत्वपूर्ण बाते आज भी भारत की विदेश नीति के महत्वपूर्ण सिद्धांत है, नेहरू की गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण ही भारत की विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता की नीति माना जाता है। भारत को उसकी गुटनिरपेक्षता ने ही विदेश अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई है। गुटनिरपेक्षता की नीति के रूप में भारत की विदेशनीति कई उतार–चढावों के दौर से गुजरी है।[13] अन्य देशों की विदेश नीतियों की तरह भारत की विदेश नीति भी राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने तथा आर्थिक विकास के लिए विदेशी धन जुटाने के प्रयासों में कही सफल तो कही असफल रही है। नेहरू युग में भारत की विदेश नीति पर तरह–तरह के आरोप लगाये जाते है। विदेश नीति के विश्लेषकों का मानना है कि नेहरू जी ने भारत की सुरक्षा के प्रति उदासीनता दिखाई ओर यथार्थवाद की बजाय आदर्शवाद पर ही विदेश नीति को प्रतिष्ठित किया। इसी कारण 1962 के चीनी आक्रमण का मुकाबला करने में भारत असफल रहा। तथा नेहरू युग में भारत की विदेश नीति की संतोषजनक विशेषता यह रही कि भारत किसी महाशक्ति का पिछलग्गू देश नही बना और भारत ने स्वतंत्र विदेश नीति का संचालन करते हुए अपने आर्थिक विकास का मार्ग चुना।[14]

1964 में पं0 नेहरू के निधन के बाद लाल बहादुर सास्त्री (1964–68) बागडोर संभाली प्रधानमंत्री बनने के बाद ही उन्होने विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मामलों मे नीति नियोजन किया । शास्त्री जी के समक्ष विभिन्न समस्याऐं भी थी देश की आर्थिक स्थिति खराब हो चुकी थी, कृषि उद्योग की गतिहीनता, आर्थिक विकास में गिरावट, औद्योगिक विकास में गिरावट और बढती हुई बेकारी के साथ–साथ कीमते आसमान पर चढती जा रही थी। खाद्यान्न की समस्या थी, देश असंख्य भूखे लोगो का सामना कर रहा था। आन्तरिक स्थिति संकट ग्रस्त होने के बाद भी शास्त्री जी ने विदेश नीति के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करते हुए कहा था विदेश नीति के क्षेत्र में हम सभी देशों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करेगे। चाहे उनकी विचारधारा अथवा राजनीतिक प्रणाली कुछ भी हो। विश्व समस्याओं के संदर्भ में अन्य देशों से सम्बन्धों का हमारा आधार गुटनिरपेक्षता ही रहेगी। हम अपने पडोसी देशों से मजबूत संबंध स्थापित करने का प्रयास करेगे। पडोसी देशों तथा दक्षिण पूर्व एशिया के देशों से संबंध घनिष्ठ बनाने की पहल की गयी। भारत–पाक युध्द (1965) में पाकिस्तान को बुरी तरह से पराजित किया गया किंतु शांतिपूर्ण एवं मित्रवत संबंध स्थापित करने की सैध्दांतिक प्रतिबध्दता के कारण ताशकंद समझौते को स्वीकार कर लिया गया। वास्तव में शास्त्री जी ने जो कुछ किया वह भारत के राष्ट्रीय हितों में वृध्दि करने वाला ही रहा और भारत की विदेश नीति भी आदर्शवादिता की बजाय यथार्थवाद से अधिक निकट रही।

इंदिरा गांधी के कार्यकालों (1966–77 एवं 1980–84)में भारत की विदेश नीति की कुछ नवीन विशेषताऐं– लचीलापन, यथार्थ व आदर्श का समन्वय, राष्ट्रीय हितों पर बल, आर्थिक सहयोग का महत्व तथा विशषज्ञों की मुख्य भूमिका आदि उभरकर सामने आयी। भारत सोवियत संध मैत्री संधि, शिमला समझौता तथा परमाणु विस्फोट भारतीय विदेश नीति की महत्वपूर्ण सफलताएँ थी। इस युग में भारत की विदेश नीति की असंतोषजनक विशेषता यह रही कि भारत के पाकिस्तान के साथ कश्मीर समस्या, चीन के साथ सीमा विवाद तथा अमेरिका के साथ हिन्द महासागर की समस्या को लेकर मतभेद जारी रहे। परन्तु इसी दौरान भारत फ्रांस के तारापुर परमाणु ऊर्जा केन्द्र के लिए परिष्कृत यूरेनियम लेने में सफल रहा। यह भी भारत की विदेश नीति की महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।[15] राजीव गॉधी के काल (1984–89) में इदिंरा गॉधी की मुत्यु के बाद भारत की विदेश नीति का संचालन राजीव गॉधी ने किया। राजीव गॉधी ने भी भारत की विदेश नीति के परम्परागत आधारों को कायम रखा। इस युग में भारत द्वारा निःशस्त्रीकरण, गुटनिरपेक्ष आन्दोलन तथा प्रजातिवाद विरोधी उठाए गए कदम बहुत महत्वपूर्ण माने गये। राजीव गॉधी ने दक्षिण अफ्रीका सरकार की रंगभेद की नीति का पुरजोर विरोध किया और नामीबिया की स्वतंत्रता व नेलसन मंडेला की जेल से रिहाई में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होने दोनो महाशक्तियों द्वारा पडौसी देशो के साथ सम्बन्ध सुधारने के सकारात्मक प्रयास किये। उन्होने चीन के साथ सीमा विवाद तथा पाकिस्तान के साथ भी अपनी समस्याओं को हल करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। वास्तव में भारत की विदेश नीति को प्रभावी बनाने में जितनी महत्वपूर्ण भूमिका राजीव गॉधी की रही, अन्य की नही। वस्तुतः राजीव गॉधी ने सिध्दांत और व्यवहार के साम्य पर आधारित विदेश नीति का ही निर्धारण व संचालन किया।

वी0 पी0 सिंह चन्द्रशेखर युग (1989 से जून 1991) के नेतृत्व वाली राजनीतिक समर्थन की दृष्टि से कमजोर सरकारों द्वारा विदेश नीति के क्षेत्र में कोई बुनियादी परिवर्तन नही किया गया।

पी0 वी0 नरसिंह राव के प्रधानमंत्रित्व काल (1991–96) के आरम्भ में ही अन्तर्राष्ट्रीय संबंधो एवं कूटनीतिक समीकरणों में आमूलचूल परिवर्तन आ चुआ था। शीतयुद्ध की समाप्ति, सोवियत संघ का विघटन तथा खाडी युद्ध में अमेंरिका की विजय ने विश्व व्यवस्था के स्वरूप को एक ध्रुवीयता की ओर मोड दिया था। तत्कालीन विश्व परिदृश्य में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन नेतृत्वहीनता की स्थिति में पहुच चुका था।साथ ही भारत में भी एक गंभीर आर्थिक संकट की स्थिति विद्यमान थी। शुरूआती उलझनों के बाद प्रधानमंत्री द्वारा स्वयं विदेश नीति के संचालन का उत्तरदायित्व ग्रहण कर लिया गया सुरक्षा परिषद् में भारत की सदस्यता के दावे को मजबूती देने सार्क के अधीन साप्टा समझौते को सम्पन्न कराने जी–15 के शिखर सम्मेलन के आयोजन द्वारा उत्तर–दक्षिण वार्ता पर जोर देने तथा भारत के आर्थिक सुधार एवं उदारीकरण कार्यक्रम में विदेशी सहयोग व पूजी निवेश सुनिश्चित करने जैसे कार्यो द्वारा विदेश नीति को नये परिवेश के अनुकूल ढालने का प्रयास किया गया। इसी काल में विदेश नीति को मूल्यों व नैतिकता की बजाय पहलुओं पर अधिक केन्द्रित किया गया।

1996–1997 के राजनीतिक अस्थिरता के दौर में एच0 डी0 देवगौडा तथा इन्द्रकुमार गुजराल के नेतृत्व मे दो गठबंधन सरकारे बनी जो अल्पकालिक कार्यकाल मे विदेश नीति की ओर अधिक ध्यान नही दे सकी। हालाकि गुजराल सरकार के समय पडोसी देशों के साथ नये सिरे से (पुराने विवाद को भूलकर) संबंधों को सुधारने या स्थापित करने की पहल की गयी । इस प्रक्रिया में राज्य सरकारों का सहयोग भी हासिल किया।[16] भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के नेत्त्व में मई 1998 में परमाणु बमों का सफल परीक्षण करने के बाद से ही भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की सूची में सामिल हो गया । यह देश के लिए एक अविश्मरणीय समय था जिसके बाद विश्व पटल पर एक नये और ऐतिहासिक भारत का उदय हुआ। पडोसियों के प्रति उनकी दिलचस्पी गहरी और सकारात्मक थी जो उनके वर्षो के लंबे अनुभव और ज्ञान से विकसित हुई थी।[17]

सन् 1998 से लेकर 2004 तक के छह साल के शासन काल के दौरान वैदेशिक मामलो में जो किया गया उसे इतिहासकार सही नीतियों के रूप में गिनते रहेगे। भारत के सामने उस समय कई चुनौतियां आई। ईराक युद्ध, तेल का संकट, हमारे खिलाफ बडे आर्थिक और राजनीतिक प्रतिबंध लगें। मानो भारत अन्तराष्ट्रीय समुदाय का अस्पृश्ट सदस्य है। कारगिल की लडाई, 2001 को संसद पर हमला, हमारे जनतंत्र की बुनियाद पर ही हमला हो रहा था। अमेंरिका ने सुरक्षा परिषद् और जी –8 तथा अन्य मंचों पर भारत के खिलाफ क्या क्या प्रस्ताव पारित नही करवाए। लेकिन यह इस बात से स्पष्ट है कि भारत ने बात अपनी ही रखी।जिस देश ने भारत के खिलाफ कई प्रतिबन्ध लगाये उसी देश के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन भारत आये। पडोसी देशों में संबंध सुधार के मामले में तो उस समय नये युग का सूत्रपात हुआ। चीन ने सिक्किम के रास्ते व्यापार करने पर सहमति व्यक्त की। इस पूर्वोत्तर राज्य को भारत का हिस्सा मान लिया। पाकिस्तान से संबंध सुधारने के लिए अटलजी ने लाहौर बस यात्रा की। लेकिन इसके बावजूद कारगिल युद्ध हुआ। जिसमें भारत ने एक–एक इंच जमीन वापिस ली। हर भारतवासी को पहली बार महसूस हुआ कि दुनिया बदल रही है और भारत भी बदल रहा है तो भारत की विदेश नीति भी ऐसी हो रही है कि भारतवासियों को गर्व हो सके।[18]

डॉ0 मनमोहन सिंह (2004–2014) की संयुक्त गतिशील, गठबंधन सरकार सत्ता में आ गई। तथा डॉ0 मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने। उन्होने विदेश मंत्रालय का कार्यभार श्री नटवरसिंह को सौपा लेकिन 2005 में ईराकी तेल घोटाले में आरोपित होने के कारण मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। प्रधानमंत्री मनमोहनसिंह के काल में सर्वाधिक महत्व विदेश नीति पर दिया गया। उन्हे अर्थव्यवस्था में विशेष रूचि थी। लेकिन सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाने के प्रयास किए गए। 2014 तक लगभग सभी देशों से मधुर संबंध बनाने के लिए वार्ताए कि गई।

मोदी युग तथा भारतीय विदेश नीति (2014 से वर्तमान तक) मोदी सरकार की विदेश नीति को मोदी सिद्धांत भी कहते है। 2014 को सत्ता में आने के तुरन्त बाद से ही मोदी सरकार ने अन्य देशों के साथ सम्बन्धों को नया आयाम देने की दिशा में कार्य करना आरम्भ कर दिया। श्रीमति सुषमा स्वराज भारत की विदेश मंत्री बनी। दक्षिण एषिया के अपने पडोंसियों से सम्बन्ध सुधारना मोदी की विदेश नीति के केन्द्र में है इसके लिए उन्होने 100 दिन के अन्दर ही भूटान, नेपाल, जापान की यात्रा की इसके बाद अमेरिका म्यांमार, आस्ट्रेलिया की यात्रा की। मोदी विदेश यात्राओं के द्वारा वैश्विक स्तर में देश की छवि सुधारने की दिशा में बढे है। खासतौर पर वहॉ जहा नुकसान ज्यादा गंभीर है। मोदी ने शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशो के राष्ट्रध्यक्षों को आमन्त्रित

कर, अपने पहले कदम से ही आलोचकों को चौका दिया था। और इस कदम ने उनकी रणनीति को भी सीमांकित कर दिया। उन्होने अफगानिस्तान, बॉग्लादेश, भूटान, मालदीन, नेपाल और पाकिस्तान के प्रमुखों को आमन्त्रित किया । इन सबसे निजी मुलाकात भी की पर अपनी शर्तो पर। जब उन्होने यह सुनिश्चित कर लिया कि शरीफ न तो प्रेस से रूबरू होंगे अथवा न ही गिलानियों से मिलेगे अथवा न ही कश्मीर का जिक्र करेगे, तब जाकर उन्होने शरीफ से आतंकबाद और मुम्बई हमले पर वार्ता की। मोदी ने यह मास्टर स्ट्रोक खेलकर उन सब लोगों का मुहं बंद कर दिया जिन्होनें उनकी पडोसियों के साथ संबंधो की इच्छा पर सवाल खडे किये थे। इसके बाद अधिकारियों के भारत आने का सिलसिला शुरू हुआ।

अमेरिका, चीन, सिंगापुर आदि से उनके प्रतिनिधि भारत आयें। दो महीने के कम वक्त के अंतराल में अमेरिका के विदेश मंत्री, रक्षामंत्री और वाणिज्य मंत्री समेत सात शीर्ष आधिकारी भारत की जमीन पर आये। अक्सर जब अन्य प्रधानमंत्री पद सम्भालते ही ताकतवर देशों का दौरा करते है, मोदी ने इसके उलट छोटे देशों का दौरा किया, पहले भूटान गये, ओर फिर नेपाल। इसके बाद तुक ईस्ट पॉलिसी पर जोर देते हुए वे जापान गये। भू–राजनीतिक संबंधों के लिए उन्होने संस्कृति और सम्यताओं के जुडाव को नया आधार बनाया। इसके बाद चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत आयें। मोदी ने ऑख से ऑख मिलाते हुए जिनपिंग के समक्ष चीनी सेना द्धारा लददाख में होने वाली घुसपैठ का मुददा उठाया। मोदी ने शी को चीनी सैन्य बलों को दूर हटाने के लिए कहा, और शी ने रजामन्दी जताई। इसके बाद अमेरिका दौरे पर भी मोदी का रेड कार्पेट पर जोरदार स्वागत हुआ। भारतीय मूल के लोगों में मोदी के प्रति जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। मेडिसिन स्क्वेयर गार्डन पर लगभग 20 हजार लोगो को उन्होने संबोधित किया। जो कि अमेरिकी धरती पर किसी विदेशी नेता को सुनने आये लोगो की सबसे बडी तादाद थी। अमेरिका समेत विश्वभर में लाइव स्टीमिगं की गई। मोदी ने फ्रांस, जर्मनी और कनाडा की यात्रा करके इन देशों में भारत की साख बढाई।[19]

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया में भारत का दबदबा कायम करने के लिए आक्रामक विदेश नीति के सहारे अपनी सारी ताकत लगा दी। उन्होने भारत के बारे में अंतर्राष्ट्रीय द्ष्टिकोण ही बदल डाला, जो कभी एक लडखडाता हुआ देश था, आज उभरती हुई वैश्विक ताकत में तब्दील हो चुका है, मोदी दरअसल एक संतुलनकारी ताकत के रूप में भारत की भूमिका को नेतृत्तवकारी ताकत में तब्दील कर देना चाहते है, वे मानते है कि ऐसा देश जहॉ मानवता का छठा हिस्सा निवास करता है, और जो जल्द ही विश्व की तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है, उसे उसका सही मुकाम हासिल हो। मोदी इस बात को भी समझते है कि अमेरिका अब अवसान की ओर है, जबकि चीन लडखडा रहा है, ऐसे में दुनिया का सबसे बडा लोकतंत्र होने के नाते भारत के पास दुनिया का नेतृत्व करने का अच्छा मौका है, मोदी को इस बात का श्रेय जाता है कि वे संबंध में सुरक्षित दूरी बनाये रखने के परम्परागत तरीके को त्याग चुके है, जिसके चलते भारत के विकल्प सीमित हो जाते है, भारत इस वक्त अपने दायरे और पहुच को व्यापक बनाने में लगा हुआ है, इस तरह मोदी ने आर्थिक राजनय को साकार करते हुए बडी संख्या में राष्टों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय आर्थिक सहयोग के समझौते किए है, मोदी ने 5 वर्ष के कार्यकाल मे बडे और समृद्ध राष्टों की यात्रा करके भारत में उन्हे निवेश के लिए आमंत्रित किया। संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और फ्रांस के साथ समझौते करके अपनी रक्षा आवश्यकता को सुदृढ किया । पाकिस्तान को दुनिया से अलग थलग करने की नीति अपनाते हुए, सर्जिकल स्ट्राइक का साहस करते हुए वहॉ हडकपं मचा दिया। पुलवामा हमले के बाद, जहॉ एक ओर पाकिस्तान को व्यापारिक दृष्टि से अलग–अलग कर दिया। वही दूसरी ओर 26 जनवरी 2019 को एयर स्ट्राइक कर उसके 350 आंतकी ढेर कर दिए। भारत मिसाइल टेक्नालाजी कंट्रोल रिलीज का सदस्य बन गया। और परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह की सदस्यता के लिए पुरजोर प्रयत्न कर रहा है, मोदी के नेतृत्व में भारत ने जी–20 ब्रिक्स आसियान, सार्क, शंघाई, सहयोंग संगठन, यूरोपीय संघ आदि के मंच पर सक्रिय एवं प्रभावी भूमिका का निर्वाह किया है। विश्व के देशों में बसे लाखों प्रवासी भारतीयों से संवाद स्थाापित कर भारत के पक्ष में अनुकूल वातावरण बनाने का प्रयास किया है।[20]

निष्कर्षः–

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि विश्व व्यवस्था में आये क्रान्तिकारी परिवर्तनों के फलस्वरूप विदेश नीति में भी परिवर्तन आ रहा है, भारत की विदेश नीति अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ सार्थक

संबंध पर बल देती है, ताकि राष्ट्रीय, आर्थिक बदलाव, राष्ट्रीय सुरक्षा, सम्प्रभुता और भैगोलिक एकता सहित अपने मुख्य लक्ष्यों को सुनिश्चित करने के साथ–साथ हम अपनी मुख्य क्षेत्रीय एवं वैश्विक चिंताओं का समाधान कर सकें। भारत ने अपने सभी पडोसी ओर सार्क देशों के साथ अपने संपर्क को गहन बनाया है। हमने अमेरिका, रूस, चीन, जापान, और कोरिया गणराज्य, यूरोपीय संघ तथा इसके मुख्य सदस्य देशों जिनमें फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम और जर्मनी शामिल है। कि साथ रणनीति भागीदारी के आर्थिक और राजनीतिक आधारों को सुदृढ और विकसित किया है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि विदेशनीति के सामने आज नई राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक चुनौतिया है, इसलिए आज यह आवश्यक है कि नये परिवेश में राष्ट्रीय हितों के अनुकूल विदेश नीति का निर्माण किया जाये। इसके लिए भारत की विदेश नीति को सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त करके बहुवैकल्पिक बनाया जाये। राजनय के राष्ट्रहितों को अनुकूल बनाया जाये, आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिए आर्थिक राजनय का विकास किया जाये। क्षेत्रीय आार्थिक सहयोग का विकास किया जाये, पडोसी देशों के साथ विश्वासपूर्ण संबंधित कार्यक्रम का स्वागत किया जाये। यदि ऐसा करने से भारत शांति व समझ से काम ले तो, भारत की विदेश नीति अपने सामने आई सभी चुनौतियों से निपटने में सक्षम होगी और भारत का विश्व के सभी देशों के साथ मधुर सौहार्दपूर्ण संबंधों का विकास होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. शर्मा, मथुरालाल, प्रमुख देशाों की विदेश नीतियां, कॉलेज बुक डिपो जयपुर (राजस्थान)2004 ।
2. जैन, संजय और भारत और आधुनिक विश्व प्र0 3 ।
3. माडलस्की, जॉर्ज दी थ्योरी ऑफ फॉरन पॉलिसी प्र0 67।
4. वैद्योपाध्याय जयन्तनुजा, द मेकिंग आर्फ इंडियाज, फॉरेन पॉलिसी : डिटरमिनेट्स इन्स्टीट्यूशनज, प्रोसेस एण्ड पर्सनलिटिज, बम्बई, 1970 पृ0 8
5. यादव, आर. एस.,भारत की विदेश नीति, किताब महल, पटना।। 2002 पृ0 24
6. बद्योपाध्याय जे. द इकोनेमिक बेसिस ऑफ फॉरेन, पॉलिसी, के. पी. मिश्रा (सम्पादक) फॉरेन पॉलिसी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, 1977 पृ0 8
7. लोक सभा डिबेट (1958) दिसम्बर, vol.-23, pp.-3960–61
8. नेहरू जवाहरलाल इंडिया एण्ड वर्ल्ड, लदंन, 1936, पृ–33
9. सचवार्जन बर्जर, जार्ज पॉवर फैलिटिक्स : ए स्टडी ऑफ इन्टरनेशनल सोसाइटी, न्यूयार्क, 1951
10. भारतीय संसद पार्लियामेंटरी डिबेट्रस (लोकसभा), वाल्यूम– V1, अंक–70, 15मई, 1954, पृ0–7496ः पृ0–67
11. भारतीय संसद आफिसियल रिपोर्ट, वाल्यूम–4भाग–2 कॉलम–1376–77
12. जवाहरलाल नेहरू– पार्लियामेंटरी डिवेट्स (लोकसभा), मार्च 1950
13. राष्ट्र के नाम प्रथम संबोधन, 11 जून 1964
14. भटनागर, महेश भारत की विदेश नीति पृ0 119
15. गुप्ता, मानिकलाल भारतीय विदेश नीति ओर निकटतम पडोसी राष्ट्र पृ0 24
16. फडिया, बी. एल. अंतर्राष्ट्रीय राजनीति पृ0 314–21
17. वाजपेयी युग की विदेश नीति 5 सितम्बर 2018 Sukrit kumar (gam orfonlijne.org delivered)
18. मोहंतीविश्वरंजन, 2012 फॉरेनपॉलिसी ऑफ इंडिया इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेंन्चुरी, न्यू सेन्चुरी पब्लिकेंशन्स, न्यू दिल्ली पृ0 58
19. From bbc.com- delivered by G.
20. https./southasianvoices.org

डॉ. अंजना खेर
सहायक प्राध्यापक (राजनिति विज्ञान) ,
शासकीय महाविद्यालय बल्देवगढ जिला टीकमगढ म0प्र0